अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – पाँचवी कक्षा (10 जनवरी, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए 10X1=10

(a) तीसरे, चौथे देवलोक की उत्कृष्ट अवगाहना है–

क. 7 हाथ की ख. 6 हाथ की

ग. 3 हाथ की घ. 2 हाथ की ( )

(b) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में लेश्या पायी जाती है–

क. छः लेश्या ख. पाँच लेश्या

ग. तीन लेश्या घ. दो लेश्या ( )

(c) तीसरे गुणस्थान में योग पाये जाते हैं–

क. 7 ख. 4

ग. 10 घ. 5 ( )

(d) 6 का उपशम 1 का वेदन भांगा है–

क. उपशम समकित का ख. क्षयोपशम समकित का

ग. सास्वादन समकित का घ. क्षायिक समकित का ( )

(e) पाँचवें व तेरहवें गुणस्थान की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति है–

क. अन्तर्मुहूर्त, तेतीस सागर झाझेरी

ख. अन्तर्मुहूर्त, अन्तर्मुहूर्त

ग. अन्तर्मुहूर्त, देशोन करोड़ पूर्व

घ. एक समय, अन्तर्मुहूर्त ( )

(f) मोहनीय कर्म के उदय से परीषह होते हैं–

क. 1 ख. 2

ग. 7 घ. 8 ( )

(g) पाँच स्थावर के द्रव्येन्द्रिय होती हैं–

क. स्पर्शनेन्द्रिय (एकद्रव्येन्द्रिय)

ख. जिह्वा, स्पर्शनेन्द्रिय (दो द्रव्येन्द्रिय)

ग. दो नाक, जिह्वा, स्पर्शनेन्द्रिय (चार द्रव्येन्द्रिय)

घ. दो नाक, दो आँख, जिह्वा (पाँच द्रव्येन्द्रिय) ( )

(h) असंज्ञी मनुष्य के जीव भविष्य में द्रव्येन्द्रिय करेंगे–

क. असंख्यात ख. संख्यात

ग. अनन्त घ. नहीं ( )

(i) ज्ञान आत्मा होती है–

क. सम्यक् दृष्टि जीवों के ख. मिथ्यादृष्टि जीवों के

ग. सभी संसारी जीवों के घ. सिद्ध व संसारी जीवों के ( )

(j) विराधक साधुजी मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं –

क. जघन्य पहला देवलोक उत्कृष्ट 12वें देवलोक

ख. जघन्य भवनपति उत्कृष्ट पहले देवलोक

ग. जघन्य भवनपति उत्कृष्ट ज्योतिषी

घ. जघन्य भवनपति उत्कृष्ट वाणव्यन्तर ( )

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ/नहीं में दीजिए– 10X1=10

(a) गर्भज मनुष्य की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट 3 गाऊ की होती है। .....

(b) पाँच स्थावर व असन्नी मनुष्य में तीन योग पाये जाते हैं। .....

(c) जिस गुणस्थान में मात्र संज्वलन लोभ कषाय का सूक्ष्म रूप से उदय रहता है उसे सूक्ष्म संपराय गुणस्थान कहते हैं। .....

(d) पहले से चौथे गुणस्थान तक चारित्र नहीं होता है। .....

(e) मिथ्यात्व व मिश्र गुणस्थान में सम्यक्त्व होता है। .....

(f) तीसरे देवलोक से नवग्रैवेयक तक के एक–एक देवता ने अतीत काल में द्रव्येन्द्रियाँ अनन्त नहीं की। .....

(g) एक–एक नारकी के नैरयिक ने संज्ञी मनुष्य रूप में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान काल में नहीं है। .....

(h) सर्वार्थसिद्ध के एक–एक देवता के संज्ञी मनुष्य के रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में अनन्त की, वर्तमान में नहीं है और भविष्य में नियमपूर्वक आठ करेंगे। .....

(i) योग आत्मा अयोगी जीवों के होती है। .....

(j) श्री भगवती सूत्र के शतक पहला, उद्देशक दूसरा में असंयत भव्य द्रव्य देव का वर्णन आता है। .....

प्र. 3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए– 10X1=10

(a)	सिद्ध भगवान में उपयोग	(क) 6	.....
(b)	5 हेमवत और 5 ऐरण्यवत	(ख) तीन गाऊ	.....
(c)	गर्भज मनुष्य की अवगाहना पहले आरे के प्रारंभ में	(ग) एक पल्योपम	.....
(d)	श्रीखण्ड के समान मीठे व खट्टे स्वाद जैसा	(घ) चार अघाती	.....
(e)	बारहवें गुणस्थान में सत्ता	(च) 14	.....
(f)	तेरहवें व चौदहवें गुणस्थान में कर्मों की निर्जरा	(छ) 7	.....
(g)	पहले गुणस्थान में जीव के भेद	(ज) मिश्र गुणस्थान	.....
(h)	मनुष्य के द्रव्येन्द्रियाँ	(झ) 4	.....
(i)	त्रीन्द्रिय के द्रव्येन्द्रियाँ	(य) 8	.....
(j)	चौरेन्द्रिय में द्रव्येन्द्रियाँ	(ल) 2	.....

प्र. 4 मुझे पहचानो– 10X2=20

(a) मेरी अवगाहना छठा आरा उतरते एक हाथ की होती है। .....

(b) मैं चारों गति और चौबीस दण्डक में जाता हूँ और चारों गति बावीस दण्डक से आता हूँ। .....

(c) मैं अशरीरी हूँ। .....

(d) मैं अन्तराय कर्म के उदय से होने वाला परीषह हूँ। .....

(e) मैं चौदहवें गुणस्थान में नहीं पायी जाने वाली आत्मा हूँ। .....

(f) मैं गुणस्थान होते हुए भी मुझमें लेश्या नहीं होती है। .....

(g) मैं शरीर होते हुए भी मुझमें द्रव्येन्द्रियाँ नहीं होती है। .....

(h) मुझमें आराधक साधु साध्वी ही आ सकते हैं। .....

(i) मैं सब जीवों में रहने वाली आत्मा हूँ। .....

(j) मुझसे भ्रष्ट, साधु के लिंग को धारण करने वाले मरकर जघन्य भवनपति उत्कृष्ट नवग्रैवेयक में उत्पन्न होते हैं। .....

प्र. 5 एक या दो पंक्ति में उत्तर लिखिए– 9X2=18

(a) अविराधक श्रावक मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं?

.....

.....

.....

(b) उपयोग आत्मा किसे कहते हैं यह किन जीवों में होती हैं?

.....

.....

.....

(c) वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और पहले दूसरे देवलोक के एक–एक देवता की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए–

.....

.....

.....

(d) संज्ञी मनुष्य के एक–एक जीव की त्रिकालवर्ती द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए–

.....

.....

.....

(e) आठवें, नौवें गुणस्थान में कितने चारित्र होते हैं? उनके नाम लिखिए–

.....

.....

.....

(f) तीसरे गुणस्थान की आगति गति मार्गणा लिखिए–

.....

.....

.....

(g) एक से चौदहवें गुणस्थान तक आठ कर्मों की निर्जरा बताइए।

.....

.....

.....

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में योग लिखिए–

.....

.....

.....

(i) तीसरे देवलोक के देवों की स्थिति लिखिए–

.....

.....

.....

प्र. 6 तीन चार पंक्ति में उत्तर दीजिए– 8X4=32

(a) पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(b) नारकी व देवताओं में पाये जाने वाले समुद्घात लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(c) अनिवृत्ति बादर गुणस्थान का लक्षण लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(d) दूसरे, तीसरे, चौथे गुणस्थान की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(e) ज्ञानावरणीय, वेदनीय कर्म के उदय से होने वाले परीषह लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(f) पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और असंज्ञी मनुष्य इन ग्यारह स्थानों के जीवों की त्रिकालवर्ती द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(g) आठ आत्माओं का अल्पबहुत्व लिखिए–

.....

.....

.....

.....

(h) विराधक साधु, असन्नी तिर्यंच, कान्दर्पिक साधु मरकर कहाँ, कहाँ उत्पन्न होते हैं?

.....

.....

.....

.....